International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विजेन्द्र की दीर्घ कविताओं में स्थापत्य संरचना

डॉ. हरिहरानंद
व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय अजमेर

सारांश

कवि कर्म अत्यन्त क्लिष्ट कार्य है। समाज में अनेक संवेदनात्मक स्थलों पर उसकी संवेदनशलता की परख होती है। कवि अपनी रचना में दीर्घकालीन समय नियोजित करता है। प्रत्येक पदार्थ या वस्तु की अधिरचना को सृजित करने के प्रयास में उसके मानस में अनेक आलोड़न विलोड़न होते रहते हैं। यही उद्वेलन उसे उसकी स्थापत्य और शैली की स्थापना कराती है। विजेन्द्र की कविता में उनके कथ्य एवं संरचना शिल्प को दीर्घ कविता के सन्दर्भ में उद्घाटित करने का प्रयास है।

संकेताक्षर – दीर्घ कविता, अनुभवजन्य संवेदना, अधिरचना, कविता में स्थापत्य।

साहित्य विधा में स्थापत्य संरचना कवि या लेखक की निजी संवेदना होती है, जो उसे किसी घटना या संदर्भ से प्राप्त हुई हो। संवेदना का यह गृहीत रूप साहित्यकार की बेचैनी बढ़ाता है, और इसे वह अपनी रचना के बहाने पाठकों तक पहुँचाता है। चूँकि विजेन्द्र कवि हैं, और कविता के संदर्भ में हमें कहना होगा, कि जब कवि अपने अनुभवजन्य संवेदनात्मक ज्ञान को अपने पाठकों के साथ साझा करना चाहता है तो कभी – कभी इस प्रक्रिया में कवि को एक दीर्घकालीन काव्य यात्रा करनी पड़ती है, फलस्वरूप कविता दीर्घाकार हो जाती है। दीर्घ कविता के स्वरूप पर विचार करते हुए **डॉ. रमेश कुन्तल मेघ** लिखते हैं – *लंबी कविताएं 'तराशी' हुई कविताएं नहीं है प्रत्युतः देश और समाज, मनुष्य और व्यक्ति की खंड – खंड, पट – पट, गड्ड – मड्ड, गाथाएं हैं। लंबी कविताएं एक संपूर्ण परिवेश और जटिल संदर्भ का अयत्नीकरण करती है इसलिए इनमें अनुभूति– खंडों और संदर्भ खंडों का गड्ड – मड्ड काव्य वस्तु में कवि और व्यक्ति के, कवि और समाज के द्वन्द्वों का साक्षात्कार करता है। इन लंबी कविताओं में बाहरी दुनिया की क्रूरता को झेलते हुए अन्दर के अँधेरे से आत्मसंघर्ष करते हुए व्यक्ति, दिशा, अर्थ, मुक्ति की तलाश कर रहे हैं। अतः ये लंबी कविताएं मुकम्मिल आर्टिफेक्ट नहीं है, अनन्त भी नहीं हैं, बल्कि अंतहीन गाथाएं हैं जिनमें अनुभव निरंतर बढ़ता चलता है, चेतना अनवरत दीप्तिमान होती चलती है तथा संघर्ष क्षणे – क्षणे तीव्र और त्रासद होता जाता है। आज का कवि समकालीन समाज के संदर्भों तथा सांस्कृतिक संवेदना की काव्यात्मक खोज में एक जटिल तथा संपूर्ण इकाई को पहचानने को व्याकुल है। इसलिए आज की श्रेष्ठ कविता की विधा 'लंबी और लंबी कविता' हो गयी है।*[1]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रभाकर श्रोत्रिय के अनुसार *दीर्घ कविता के सृजन के लिए कवि के वैयक्तिक अनुभव में चिन्तन, कल्पना, अन्तर्दृष्टि, विवेक, संवेदना, यथार्थ, अन्वीक्षण, ज्ञान और महत् संरचनात्मक कौशल की जरूरत है। इन्होने दीर्घ कविता को द्वन्द्वात्मक संश्लिष्ट में उपलब्ध 'संक्षिप्ततम' रचना स्वीकार किया है – प्रलंब कविता का रचना विधान विरलता और सघनता के तनाव में निहित है। कवि के पास कहने को बहुत कुछ होता है। उसे विस्तार की ओर खींचता है, जबकि उसका संरचना मानस उसे भाषा के अत्यंत सांकेतिक और संश्लिष्ट साधनों, छलांगों और सघनताओं मे बंदी बना लेना चाहता है। यह रस्साकशी पूरी कविता में चलती रहती है। बहुत विस्तृत और जटिल कथ्य को जहाँ एक ओर सीमित साधनों में संयत किया जाता है, वहीं कथ्य भी अपनी संपूर्णता और परिणति के लिए घमासान लड़ाई लड़ता है। इसी प्रक्रिया में कविता लंबी होती चली जाती है और जब तक अभिव्यक्ति संपूर्ण नहीं होती कवि उससे पीछा नहीं छुड़ा पाता।* **2**

बलदेव वंशी कहते हैं – *लंबी कविता अपनी प्रकृति, रूप, और चरित्रगत विशिष्टता में संयत, बहुआयामी व्यापक दृश्य फलक लिए हुए प्रदीर्घ ऐसी रचना है जो विचार – दृष्टि एवं संवेदनात्मक धरातल पर परिवेश से बृहत्तर सरोकार रखती है।***3**

इस प्रकार दीर्घ कविता का विषय भावावेश की नहीं, बल्कि चिंतन की उपज है। इसमें मानसिक संघर्ष और द्वन्द्व का घमासान है, विचारात्मकता से उत्पन्न दीर्घता है। कवि ने अपने जीवन का आरंभ बदायूँ जिले के दोआबी देहात से आरंभ किया। भरतपुर में लगभग तीस वर्ष गुजारे, तदुपरांत चूरू, नोहर जैसे रेतीले स्थानों पर भी जीवन को नजदीक से देखा और अनुभव किया है। कवि ने अपनी प्राध्यापक की नौकरी के दौरान उन इलाकों के जीवन को देखा जो विभिन्न और विपरीत परिस्थितियों में जिजीविषा को पाले हुए है। मेहनतकश मजदूर, किसान, कारखाने का श्रमिक, और लोक के वे सभी स्त्री पुरूष जो जीवन से जूझ रहें हैं। कवि ने उन जूझते हुए लोगों के मन को टटोला है, आत्मसात किया है फिर उन कारणों पर भी विचार किया कि ऐसा क्यों है? अपनी इस चिंता को कवि ने सार्वजनीन बनाकर हम सबके सामने रखा है और अनेक सवाल छोड़े है। यहीं से विजेन्द्र की दीर्घ कविताओं में स्थापत्य की खोज आरंभ होती है।

विजेन्द्र ने यह अनुभव किया है समकालीन काव्य रचते समय कितने श्रम और शिल्प की आवश्यकता होती है। कवि बड़ा नहीं होता रचना बड़ी होती है। रचना की श्रेष्ठता से ही कवि को बड़प्पन मिलता है। ***उठे गूमड़े नीले*** कविता संग्रह की पहली कविता 'टूटती हैं ढाँए' में विजेन्द्र ने दिखाया है कि दुनिया को सुंदर बनाने का दायित्व केवल मनुष्य पर ही है। वह मजदूर है वह श्रमिक है जो धमन भट्टी में इस्पात ढालता है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और उसकी शक्ल पूँजीवाद के आरोपित अँधेरे में दिखाई नहीं देती, लेकिन वह उस अंधेरे में भी झाऊ की जड़ों के समान धरती में गहरे तक जुड़ा है। मशीनों के साथ वह नई रचना कर रहा है –

रात दिन,
अग्निचक्र, दॉतदार पहिए
पता लगता है
मनुष्य की शक्ति का
जब कटतें हैं गाटर
नबती हैं छडें
बनकर निकलती
बडी बडी स्पाती चादरें
कॉटेदार तार
रेल के डिब्बे, पटरियां – फिश प्लेंटें। 4

कवि यहाँ अपनी कविता के विस्तार में यह कहना चाहता है कि किस प्रकार आधुनिक और सभ्य कहे जानी वाली इस दुनिया के निर्माण में उत्पादक वर्ग अपना योगदान देता है। यह दुनिया उच्च शिक्षित मनुष्य की बुद्धि और श्रम के मेल से ही खड़ी हो सकती है। यह एक **'नई अधिरचना'** है, जिसका निर्माण 'फौलादी चोट' के बिना संभव नहीं है।

विजेन्द्र कविता के आरंभ में अंधकार और स्तब्धता के बीच उस 'दहल' को रेखांकित करते हैं जो वस्तुतः पहियों के ढलने की आवाज है। एक ऐसी आवाज जिसे अनसुना करना कवि कर्म के साथ अन्याय करना है। इस कविता में कवि संरचना के उस विज्ञान का परिचय देते हैं जो कठोर धातुओं से जन्मता है। यह उस विश्व की कविता है जो द्रव और उर्जा से बनती है। इसका नियंता कोई ईश्वर या अदृश्य शक्ति नहीं, वरन् वह मनुष्य है जो खनिज को इस्पात में ढालता है, वह उत्पादक वर्ग है जो रात दिन खुदाई कर खनिज निकालता है। विजेन्द्र इन श्रमिकों की एकता चाहते है वे इन्हें संगठित होकर **नई मुक्ति और नई अधिरचना** से युक्त देखना चाहते हैं–

अधिरचना से बदलता
सौन्दर्य बोध ।
नक्श ।
रेखाएँ ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वर्ण ।

आकृतियाँ ।

ढलता है रचना का बाह्यान्तरंग। 5

उठे गूमड़े नीले कविता कवि की दार्शनिक धरातल पर **नए सौन्दर्यशास्त्र** की रचना करने वाली कविता है। इसमें जीवन की पहचान विपुल, विरल, अथाह और कठोर जैसे विशेषणों के साथ संश्लिष्ट रूप में की गई है। विजेन्द्र कविता के आरंभ में कहते हैं– 'अग्निदाह के भीतर भी चलती हैं क्रियाएँ'। कविता में आगे विजेन्द्र ने लिखा है –

रोज रोज उगती हैं
नयी पत्तियाँ
छुपे
छुपे अनदेखे
अनजाने
बिन पानी
बिन खाद
बढ जाते हैं टहनी के ओर छोर
झेल झेल कर झल्ल आँच की
हरियाती है
फुनगें .....
गति से कंप जनमता है
अंदर ही अंदर
उन खंकड ढीमों के
बनता है कोयला
मणियों का सरताज
चमकता हीरा
वेगमय
जीवन।'6

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सृजन की इस नित्यता को कवि अपनी कविता की रचनाशीलता से जोड़ता है। कवि के अनुसार सृजन सृष्टि की हर इकाई का जीवन धर्म है। वह अच्छा, बुरा, विशिष्ट, साधारण जो कुछ भी हो यह सब मानव धर्म के अंतर्गत आता है। जड़सूत्रवाद के सहारे उसे सटीक समझने का दावा करना मूर्खता है। एक रचनाकार को बहुत कुछ अपनी ज्ञानात्मक संवेदना के भीतर अर्जित करना पड़ता है। स्वयं भाषा भी जीवनव्यापी संघर्षो के बल पर अर्जित की जाती है। कवि के संस्कार अचानक नहीं बदल सकते। उसके संस्कारों का निर्माण जिन कई तत्वों से होता है उनमें एक है पुराण गाथाएँ – शेषफण, कामधेनु, पारिजात, कल्पवृक्ष, नन्दन वन, देवी-देवता, समुद्र मंथन, चौदह रत्न – इनकी कविताएं सुनकर जिस व्यक्ति का निर्माण होता है वह जल्दी से अलीकपंथी नहीं हो सकता। वह अनेक अंधविश्वासों से जुड़ जाता है। 'यह भी लिखा बदा है', युगों से ऐसा ही होता आया है'। ये बातें वैज्ञानिक चेतना के मार्ग में अड़चन है। परिवेश और प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण विकास – प्रक्रिया की वैज्ञानिकता को अमूर्त नहीं रहने देता। मनुष्य का श्रम ही सौन्दर्य का मूल है। कवि लिखता है –

मेरा भरोसा
बहुत- बहुत दबा के भी
डिगा नहीं पाया कोई
जिसे आज तक
उसको उसके
पथ से
और उसी ने
काट काट के
भरा है लॉक भुजाओं में
पॉव से रौंद बनाया गारा
हर बार हर बार
रचा है
उसने शिल्प
सौन्दर्य। 7

विजेन्द्र की कविता उस मनुष्य को समर्पित है जो अपने श्रम से दुनिया को सुंदर बनाने में जुटा है। पर कवि यह भी कह देना चाहता है कि वे लोग जो सौन्दर्य की परिभाषा सुंदरता को देखकर देते है वे सतही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिभाषक हैं। असल सौन्दर्य तो उन हाथों में है जो गजरे बनाते है पर उसकी खूशबू नहीं ले पाते। **कविता और कला बाजारवाद की वस्तुएँ** नहीं हैं। विजेन्द्र लिखते हैं –

कलाकृतियाँ बिकती हैं सस्ती
चाँदनी चौक
चौरन्गी
म्लाड में
खड़े देखते विक्रेता
कवि
आलोचक धनी
लगी भीड़ सागर तट पे
देख रही है
छिपता सूरज
जल में
आदमी की शक्ल हो रही धुँधली
मैली
अमूर्त।'8

कवि की चिन्ता है कि भूमंडलीकरण की अंधी दौड में **मनुष्यता** धुंधली होती जा रही है। पर कवि देख रहा है कुछ परिवर्तन नित्य प्रकृति और विश्व जीवन में हो रहा है। पुरानी दुनिया खत्म हो रही है। नयी दुनिया उसकी जगह ले रही है। विजेन्द्र इस नई दुनिया का भूगोल गहरी आत्मीयता से अपनी दीर्घ कविताओं में रचते हैं। इन कविताओं में पुरानी मान्यताप्राप्त सुविधासंपन्नों के बेदखल होते जाने का दृश्य जगह जगह आकर्षक है। वह चाहे 'कुकुर भाँगरा' हो अथवा 'धरती कामधेनु से प्यारी' का 'मुर्दा सीने वाला' हो – सभी वास्तविक दुनिया में अपनी प्रतिष्ठा के लिए संघर्षरत शताब्दियों से उपेक्षित समाज को प्रतिरूपित करते हैं। इनकी केंद्रीयता से **समकालीन कला मूल्य की अवधारणा** बनती है। पुरातनपंथी इन्हें स्वीकार नहीं करना चाहते। महाप्राण निराला ने भी 'कुकुरमुत्ता' की रचना की थी, लेकिन 'राम की शक्ति पूजा' और 'तुलसीदास' के प्रबंध विधान के सामने उसे मान्यता नहीं मिली। अकादमिक बहसों में 'शक्तिपूजा' की श्रेष्ठता कायम रही। विजेन्द्र 'कुकुरमुत्ता' के कला मूल्य को अपनी गहरी सूझ बूझ से एक सुसंगत सांस्कृतिक परंपरा में ढालते हैं। इसके पीछे भी उनकी सौन्दर्य दृष्टि सक्रिय है – वही सौन्दर्य दृष्टि, जो श्रम

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और संघर्ष के साथ लगी चलती है। 'खड़ा मेंड पर कुकुर भाँगरा' कविता में 'कुकुरभाँगरा' की स्थिति लगभग वही है जो निराला के 'कुकुरमुत्ता' की। कुकुर भाँगरा की आपबीती में उत्पादन के कार्य में लगे लोगों की नियति से साक्षात्कार है –

बार बार उखाड़ देता है
जड से भू स्वामी
उगि आता है
निर्लज्ज
फिर भी
वह 9

प्रसिद्ध साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी का कुटज और शिरीष के फूल इस समय अनायास याद आ जाते हैं। द्विवेदी जी के कुटज में जो जिजीविषा है, वही कुकुरभाँगरा में नजर आ जाती है। विजेन्द्र इसे अच्छी धरती का श्याम सलोना बालक कहते हैं। **नए लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों** को मन से जिन्होने स्वीकार नहीं किया वे या तो गेहूँ की बात करते हैं या गुलाब की। उनकी नजर में कुकुर भाँगरा अपनी संस्कृति का कूड़ा – करकट है। उसके छूने से उनकी खाल गंदी होती है। फूलों की क्यारी में उससे उन्हें बू आती है। उन्हें लगता है–

रौनक गई बाग की
आँखों में छिदता है
इसका बढना ऊपर 10

विजेन्द्र प्राकारांतर से नए लोकतांत्रिक समाज में रचनाकारों की छद्म प्रगतिशीलता को भी बेनकाब करते है। इसमें अज्ञात कुलशील प्रतिभाओं को भी प्रतिरूपित करता है 'कुकुरभाँगरा'। आज भी उन कुलीनों की कमी नहीं है जो रचनाशीलता के नवीन दृश्यों को फूटी आँख देखना नहीं चाहते। यहाँ तक कि वे इस सच को भी नहीं स्वीकारते कि वे ध्वस्त हो रहे हैं।

विजेन्द्र **परिवर्तनात्मक सृजन को कविता के लिए आवश्यक** मानते हैं। उनके अनुसार श्रेष्ठ कविता सदैव यथास्थिति को भंग कर एक नयी दिशा को जन्म देती है। ऐसा करना उसकी जीवंतता की निशानी है, और ऐसी कविता हमारी भाव दशा को बदलने का कार्य करती है। विजेन्द्र की जनशक्ति कविता इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। कवि जनशक्ति को संगठित कर पूँजीकेंद्रित व्यवस्था को तोड़ना चाहता है। इसी व्यवस्था को खंडित करना चाहता है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तू ही हंसिया क्यों न ले

और काट.....

उसी से यह आवाज उपजती है

इन कहने सुनने वाली बातों से

चट्टाने नहीं पिघलेंगी।11

डॉ जीवनसिंह के अनुसार 'जनशक्ति' कविता संग्रह की कविताओं में विजेन्द्र ने जिस परिवेश को देखा है साक्षात किया है उसी की चीजों ,परिदृश्यों, आचार – व्यवहारों, क्रियाकलापों, प्रकृति और विचारों ने इसका पुनःसृजन किया है।

विजेन्द्र ने देखा, और जाना कि मेहनतकश किसान और श्रमिकों का हौंसला कभी पस्त नहीं होता। ये लोग राष्ट्र को समृद्ध करते हैं। धरती को उर्वर बनाते हैं। चट्टानों से कोयला, हीरा और सोना तक निकालते हैं परंतु पूंजीवादी लोग इनके असंगठित होने का फायदा उठाकर इनका शोषण करते हैं। यदि ये किसान और श्रमिक संगठित हो जाए तो इन्हें कोई भी चुनौती नहीं दे सकता। ये संगठित होकर इस शोषण की व्यवस्था से मुक्त हो सकते हैं। कवि इससे आगे भी कहता है कि **समतामूलक समाज के गठन और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनशक्ति का आह्वान आवश्यक है।**

जनशक्ति कविता संग्रह की कविता मैग्मा अपने आप में **नये विषय वस्तु का पुनःसृजन** है। मैग्मा' भूगर्भ में घटित रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप चट्टानों के पिघलने से रिसा हुआ गाढ़ा द्रव पदार्थ है। ठीक उसी तरह प्रत्यक्ष तथा परोक्ष जगत के व्यापक संज्ञान से निर्मित इस बड़े कवि की चेतना। कवि आरंभ में ही कहता है 'मैग्मा से ही बना है, मेरी आत्मा का स्थापत्य'। विजेन्द्र गंगा के खादर से लेकर मरूस्थल तक जीवन को देखते हैं। लुप्त हुई नदियों के उद्गम, सूखे झरनों के चट्टानी स्रोत, क्षय होते मनुष्यों की पीड़ाएं, लहरदार टीलों में छिपी रेगिस्तानी लोगों के जीवन की कठोरताएं, लड़ते आदमी का समर तथा कवि का अपना परिवेश, उसके मन के अँधेरे कोनों में रोशनी देते है यही उसकी कविता का जातीय वेश है। उसके जीवन का कल्पतरू इसी चट्टानी अतीत से फूला फला है। कवि को पता है कि आदमी अपनी नियति को बदलेगा। सृजन और विनाश दोनों को एक साथ देखने वाले कवि को नए नए रूपाकार रचने को उठे महाबली हाथ प्रेरित करते हैं।

कवि नए सौन्दर्यबोध का रचयिता है ऐसा करने के लिए उसनें अनेक बंधों को त्यागा है। अपनी व्यापक अंतर्दृष्टि से वह खदानों की उभरी पसलियों को देखता है। वह धरती की अंतड़ियों तक पहुँचना चाहता है वह महसूस करता है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मेरे भीतर भी सोए हैं ज्वालामुखी अशेष

जैसे पृथ्वी के गर्भ में है

लावा, द्रव, गाडा, ठोस

जो बेचैन है

बाहर आने को.....। 12

कवि जानता है कि मैगमा का ताप बढ रहा है अन्दर की आग अभी तक नहीं बुझी है, तभी तो धरातल फोड़कर निकलता है सुर्ख कल्ला बीज का। विजेन्द्र की यह कविता वही **जैविक मैग्मा** है । आदमी की हर साँस, धड़कनों का कम्प – प्रकम्प, रोयों का उजासित स्फुरण, उसकी नम आह तथा उसमें बसा ताप, लपटों की वर्षा से। इस लड़ाई में कवि के अग्रज और सहोदर भी साथ नहीं है। लेकिन वे उन शब्दों के द्वारा अपनी उस चेतना को जिंदा रखने में काबिल हुए है जो गहरे तक देखने की ताकत रखते हैं–

'मैग्मा की नसें फैली हैं अन्दर – अन्दर

बाहरी और भीतरी चट्टानों के रिश्ते

जानने को ही ।

मैंने भूगर्भ पथ चुना है

धरती की कमजोर परतों को तोडकर ही

वह चट्टानों को उगाता है।'13

मैग्मा कविता की विषय वस्तु मैग्मा, कवि विजेन्द्र की सूक्ष्म वैज्ञानिक विश्वदृष्टि का अपूर्व शोध है और जनपक्षधर कविता का उत्स भी। यहाँ सिर्फ विचार ही नहीं बल्कि कवि के अद्भुत काव्य कौशल द्वारा कविता के नए सौन्दर्यबोध तथा आधुनिक प्रतिमानों की अपूर्व सृष्टि हुई है।

इस प्रकार विजेन्द्र की लंबी कविताओं का महत्त्व उनकी स्थापनाओं से है जिनमें उन्होनें एक सच्चे कवि की प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इन कविताओं में चरित्रों के माध्यम से परिवेशगत कथ्य है जिनमें आमजन के संघर्ष उसकी पीडा और उसके संवाद है जिनको कवि के संवेदनशील मन ने पढकर पाठकों तक पहुंचाया है। विजेन्द्र की कविताओं को पढकर कहीं भी कुछ भी पराया नहीं लगता। उनकी कविताओं में किसान और श्रमिकों के सौन्दर्य के चित्र है साथ ही कवि कर्म की गंभीरता, रचना प्रक्रिया है। कवि ने विज्ञानऔर भूगोल के ज्ञान को भी कविता से जोडा है। जो उनके समकालीन परिवेश के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि दीर्घ तनाव को लेकर उनकी कविता ने जो रचा है वह समकालीन कविता की अजस्र धारा है जो आगामी कवियों की पैतृक सम्पत्ति होगी जिसे वे आगे विकसित कर सकने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में समर्थ होगें। उनकी स्थापनाएं मौलिक एवं नवीनता से युक्त हैं वैज्ञानिक है जो उन्हें समकालीन कवि ठहराती है।

'कठफूला बाँस' कविता संग्रह की कविता 'संवाद स्वयं से' में कवि अपने परिवेश, साधन और कवि कर्म का अत्यंत सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण करता है । कविता की रचना प्रक्रिया, सही और गलत के अंतर को जानने की तीक्ष्ण बुद्धि, लोक में फैले विश्वास और अंधविश्वास की प्रकृति, नए रचना विधान , लोक का सौन्दर्य ,और श्रम की प्रतिष्ठा में अपनी इस कविता का सृजन करता है। कवि कविता के लिए 'पहले देखता हूँ..... सुनता हूँ / फिर छूता हूँ जानने को ' की प्रक्रिया को अपनाता है। मनुष्य और उसके महत्व का आकलन करता है–

'गाय के सींग पर नहीं
धरती घूमती है अपनी ही धुरी पर
उन्हें अंध कोठरियों से बाहर निकालो
जिससे वे देख सकें।'14

कवि अपनी उम्मीदों को पूरा होता नहीं देखकर खिन्न होता है वह क्षरित होती मनुष्यता को देखकर चिंतित है और अपने आप से संवाद करते हुए अपनी बात पूरी करता है –

'उम्मीदें अब छीजतीं हैं
इरादों में जमते देख रहा हूं काई
कब तक करता रहूं संवाद स्वयं से।'15

कठफूला बाँस की दीर्घ कविता 'कौतूहल' पदार्थ के निर्माण के साथ जीवन निर्माण, गति, कार्यशैली आदि का सूक्ष्म अध्ययन है। कवि कहता है कि प्रत्येक पदार्थ अपने दूसरे पदार्थ से जुड़ा है। प्रत्येक पदार्थ की अपनी गतिकी है जिसका निर्वाह वह स्वतः करता है –

घटक हैं बहुत सारे द्रव्य के
जुड़ता है एक धातुक घटक दूजे से तीजे से
मनुष्य का चित्त मनुष्य से
रिक्त ही जोड़ता है उन्हें दिक् से
काल से, विमा से, मुझ से
चाहिये हर तृण को दिक्काल खडे होने को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नई उर्वरा

नये बीज बोने को।16

कवि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में जीवन देखता है। वह सृष्टि के अन्दर गुंथी बिंधी हर रचना को उसके क्रियाशील गतिमान को और उसको भी जिसे कोरी आँख से नहीं देखा जा सकता है। कवि उस ऊर्जापुंज को भी देखता है जो आँखो से नहीं दिखाई देने पर भी अत्यंत ताकतवर होता है, विस्मयकारी होता है। कवि प्रत्येक रचना से पूर्व उसके **सतत् अभ्यास और उसकी वस्तुपरक जानकारी** का होना आवश्यक मानता है। साधना तप है, कविता साधना है और उसे तपकर ही साधा जा सकता है। इसके लिए जलना होता है ठीक उसी तरह जिस तरह आग में सोना तपकर कंचन बनता है और कच्ची मिट्टी सुर्ख ईट –

'दहन की प्रक्रिया है हर जगह
सतत, अविराम..... अविरल
तपकर ही होती है
आत्मा पवित्र
स्वर्ण होता है कंचन
कच्ची मिट्टी बनती है सुर्ख ईट।17

विजेन्द्र के अनुसार रचना की प्रक्रिया को जानने के लिए हमें उसके अन्दर तक उतरना होगा। उसकी लौ को पहचानना होगा। उसके भावों से तादात्म्य स्थापित करना होगा। कवि इस संदर्भ में इतना ही कहना चाहता है कि **वही कवि स्थापित हो सकेगा जो लोक से जुड़ा** है। बिना लोक को जाने समझे जो कविता रचता है उसकी रचना पूर्ण नहीं हो सकती है। –

'डूबेगा वही गहरे जल में
आता नहीं है तैरना जिसे
साध सकता नहीं जो
अपने घनत्व को।'18

इस संग्रह की अंतिम कविता 'प्लाज्मा' है। प्लाज्मा क्या होता है इसका जवाब वे यह देते हैं कि प्लाज्मा भौतिकी और जैविकी दोनों में होता है। दोनों रूपों में द्वंद्वात्मकता से ही जीवन जगत बना है। भौतिकी मे उच्चताप की गैस का नाम प्लाज्मा है और जैविकी में प्लाज्मा वह तरल द्रव्य है, जिसमें कोशिकाएं रहती हैं। इस तरह प्लाज्मा के भौतिक तथा जैविक रूपान्तरण को जानने के लिए दोनों तरह के प्लाज्मा को समझना बेहतर होगा। विजेन्द्र जीवन – जगत् के प्रति भौतिकवादी हैं, जो विज्ञान सम्मत है और इतिहास

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्मत भी। ऐसा इसलिए कि वे जीवन, जगत और इतिहास की व्याख्या मार्क्सवादी दृष्टि से करते हैं। विजेन्द्र कहते हैं कि प्रत्येक पदार्थ में गतिशीलता उसमें निहित द्वंद्व के कारण होती है। भाववादी दर्शन को मानने वाले भी सृष्टि के विकास में द्वंद्वात्मकता को स्वीकार करते हैं।

'प्लाज्मा' कविता की रचना प्रक्रिया से पता लगता है कि विजेन्द्र किसी भी विषय पर पूर्व तैयारी किस तरह और कितनी गहराई से करते हैं। वे सम्पूर्ण इन्द्रिय बोध के साथ दृश्य से आगे उस अदृश्य को जानने की जिज्ञासा रखते हैं जहाँ तक जाना हर किसी के लिए असंभव सा है। एक सर्जनशील कवि की कविता की रचना प्रक्रिया किस प्रकार की हो सकती है। यह इस कविता के अध्ययन करने से पता चलती है–

'धरती की परत दर परत
लिखा है मेरा जीवन
क्रियाओं का अंश अंश रोमिल इतिहास है मेरा
खोजे हैं मैनेंजीवन स्रोत जहां तहां
चट्टानों में टीलों में, बीहडों में खदानों में
दाखिल हुआ हूं ज्ञान विज्ञान के
नये रचे द्वारों में
खिला हूं, पला हूं, उन्हीं के बीच।19

इस प्रकार विजेन्द्र की दीर्घ कविताओं का महत्त्व उनकी स्थापनाओं से है जिनमें उन्होनें एक सच्चे कवि की प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इन कविताओं में चरित्रों के माध्यम से परिवेशगत कथ्य है जिनमें आमजन के संघर्ष उसकी पीड़ा और उसके संवाद है जिनको कवि के संवेदनशील मन ने पढकर पाठकों तक पहुँचाया है। विजेन्द्र की कविताओं को पढकर कहीं भी कुछ भी पराया नहीं लगता। उनकी कविताओं में किसान और श्रमिकों के सौन्दर्य के चित्र है साथ ही कवि कर्म की गंभीरता, रचना प्रक्रिया है। कवि ने विज्ञान और भूगोल के ज्ञान को भी कविता से जोड़ा है। जो उनके समकालीन परिवेश के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि दीर्घ तनाव को लेकर उनकी कविता ने जो रचा है वह समकालीन कविता की अजस्र धारा है जो आगामी कवियों की पैतृक सम्पत्ति होगी जिसे वे आगे विकसित कर सकने में समर्थ होगें। उनकी स्थापनाएं मौलिक एवं नवीनता से युक्त हैं, वैज्ञानिक हैं, और उनकी दीर्घ कविताओं के संदर्भ में स्थापित करती है।

संदर्भ–

1. डॉ. रमेश कुन्तल मेघ, क्योंकि समय एक शब्द है, पृ. 485, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद 1975

2. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, कालयात्री है कविता, पृ. 101, स्मृति प्रकाशन, इलाहबाद 1983
3. डॉ. बलदेव वंशी, लंबी कविताएँ : वैचारिक सरोकार, पृ. 7, जयश्री प्रकाशन, नई दिल्ली 1983
4. उठे गूमड़े नीले, विजेन्द्र, पृ. 33. शारदा सदन इलाहबाद 1983
5. टूटती हैं ढाएँ, उठे गूमडे नीले (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 39 – 40, शारदा सदन, इलाहबाद 1983
6. वही, पृ. 69 – 70
7. वही, पृ. 79
8. वही, पृ. 83 – 84
9. खडा मेड पर कुकुर भांगरा, उठे गूमडे नीले (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 88, शारदा सदन, इलाहबाद 1983
10. वही, पृ. 92
11. जनशक्ति, विजेन्द्र, पृ. 311, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2011
12. सेतु पत्रिका, संपादक देवेन्द्र गुप्ता, जुलाई से दिसम्बर 2012, पृ. 196
13. वही, पृ. 197
14. संवाद स्वयं से, कठफूला बाँस (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 65, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर 2013
15. कौतूहल,कठफूला बाँस (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 90, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर 2013
16. वही, पृ. 120
17. वही, पृ. 125
18. वही, पृ. 128
19. प्लाज्मा, बनते मिटते पाँव रेत में (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 121, वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर 2013